कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

पद्यांश

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

सन्दर्भ–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड के अन्तर्गत 'धनुष-भंग' नामक शीर्षक से उद्धृत है तथा रामचरित मानस के 'बालकाण्ड' से लिया गया है। इसके रचयिता 'गोस्वामी तुलसीदास जी' है।

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी।।
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने।।
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरसहिं सुमन जनावहिं सेवा।।
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी।।
चलत राम सब पुर नरनारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी।।
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे।।
तौ सिवधनु मृनाल की नाईं। तोरहुँ रामु गनेस गोसाईं।।

काव्यगत सौंदय- रस-भक्ति एवं श्रृंगार, छन्द-चौपाई, अलंकार-रूपक, उपमा, अनुप्रास, भाषा- अवधी, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर- व्याख्या- राजाओं की आशारुपी रात्रि नष्ट हो गयी। उनके वचनरुपी तारों के समूह का चमकना बंद हो गया अर्थात् वे मौन हो गये। अभिमानी राजारुपी कुमुद संकुचित हो गये और कपटी राजारुपी उल्लू छिप गये।।

   मुनि और देवतारुपी चकवे शोकरहित हो गये। वे फूल बरसाकर अपनी सेवा प्रकट कर रहे हैं। प्रेम सहित गुरु के चरणों की वन्दना करके श्री रामचन्द्र जी ने मुनियों से आज्ञा माँगी ।।

   समस्त जगत् के स्वामी श्रीराम जी सुन्दर मतवाले श्रेष्ठ हाथी की-सी चाल से स्वाभाविक ही चले। श्रीरामचन्द्र जी के चलते ही नगर भर के सब स्त्री-पुरुष सुखी हो गये और उनके शरीर रोमांच से भर गये।।

उन्होंने पितर और देवताओं की वन्दना करके अपने पुण्यों का स्मरण किया। यदि हमारे पुण्यों का कुछ भी प्रभाव हो, तो हे गणेश गोसाईं! रामचन्द्रजी शिवजी के धनुष को कमल की डंडी की भाँति तोड़ डालें।

3. भगवान श्रीराम किस प्रकार चले?

उत्तर-भगवान श्रीराम मतवाले, सुन्दर व श्रेष्ठ हाथी की सी चाल से सहजता के साथ चले।

4. किसका शरीर पुलकित हो उठा?

उत्तर-धनुष भंग हेतु श्रीराम के चलने से नगर निवासी नर-नारियों का शरीर पुलकित हो उठा।

5. किसकी आशारुपी रात्रि नष्ट हो गई?

उत्तर-समस्त राजाओं की।

सखि सब कौतुकु देखनिहारे। जेउ कहावत हितू हमारे।।
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं।।
रावन बान छुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा।।
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं।।

काव्यगत सौंदय- रस-वात्सल्य, छन्द- चौपाई, अलंकार-रूपक, दृष्टान्त, अनुप्रास, भाषा- अवधी, गुण-प्रसाद, माधुर्य।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- व्याख्या- हे सखि! ये जो हमारे हितू कहलाते हैं, वे भी सब तमाशा देखनेवाले हैं। कोई भी गुरु विश्वामित्र जी को समझाकर नहीं कहता कि ये बालक हैं, इनके लिये ऐसा हठ अच्छा नहीं। रावण और बाणासुर ने जिस धनुष को छुआ तक नहीं और सब राजा घमंड करके हार गये, वही धनुष इस सुकुमार राजकुमार के हाथ में दे रहे हैं। हंस के बच्चे भी कहीं मन्दराचल पहाड़ उठा सकते हैं?

3. **उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा छंद है?**

उत्तर- चौपाई।

4. **राजकुमारों के हाँथ में शिवधनुष देना कैसा होगा?**

उत्तर-मन्दराचल पर्वत को हंस के बच्चे के हाथ में देने जैसा होगा।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे।।
देबि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुषु राम सुनु रानी।।
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा बिषादु बढ़ी अति प्रीती।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही।।
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी।।
करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरूआई।।
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा।।
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर , छन्द– चौपाई, अलंकार–अनुप्रास, उपमा, पुनरूक्तिप्रकाश, भाषा– अवधी, गुण–प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- व्याख्या- कामदेव ने फूलों का ही धनुष-बाण लंकर समस्त लोकों को अपने वश कर रखा है। हे देवी ! ऐसा जानकर सन्देह त्याग दीजिये। हे रानी! सुनिये, रामचन्द्र जी धनुष को अवश्य ही तोड़ेंगे।।
3. **सखी के वचन सुनकर रानी को विश्वास हो गया । उनकी उदासी मिट गयी और श्रीराम के प्रति उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया । उस समय श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सीताजी भयभीत हृदयसे जिस-तिस से विनती कर रही हैं ।।**

   वे व्याकुल होकर मन-ही-मन मना रही हैं- हे महेश-भवानी! मुझ पर प्रसन्न होइये, मैंने आपकी जो सेवा की है, उसे सुफल कीजिये और मुझ पर स्नेह करके धनुष के भारीपन को हर लीजिये ।।

   गणों के नायक, वर देने वाले देवता गणेश जी ! मैंने आज ही के लिये तुम्हारी सेवा की थी । बार-बार मेरी विनती सुनकर धनुष का भारीपन बहुत ही कम कर दीजिये ।।
4. **पद्यांश में सीताजी का सशंकित मन श्रीराम से विवाह के लिए देवताओं से किस प्रकार विनती कर रहा है?**

उत्तर-सीताजी का सशंकित मन श्रीराम से विवाह के लिए शिव और भवानी तथा गणेश भगवान से विनती कर रहा है कि हे महेश-भवानी! मुझ पर प्रसन्न होइये, मैंने आपकी जो सेवा की है, उसे सुफल कीजिए और मुझ पर कृपा करके धनुष के भारीपन को हर लीजिए और कहती हैं हे गणों के नायक! वर देनेवाले देवता गणेशजी! मैने आज ही के लिए तुम्हारी सेवा की थी। बार-बार मेरी विनती सुनकर धनुष का भारीपन बहुत ही कम कर दीजिए।

प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल।।
गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रकट न लाज निसा अवालोकी।।
लोचन जल रह लोचन कोना। जैसें परम कृपन कर सोना।।
सकुची ब्याकुलता बड़ि जानी। धरि धीरजु प्रीतिति उर आनी।।
तन मन बचन मोर पनु सांचा। रघुपति पद सरोज चिति रांचा।।
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहि मोहि रघुबर कै दासी।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना।।
सियहि बिलाकि तकेउ धनु कैसें। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसें।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार एवं वीर, छन्द– दोहा और चौपाई, अलंकार–रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, भाषा–अवधी, गुण–ओज।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
उत्तर–उपरोक्त।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
उत्तर– व्याख्या– प्रभु श्रीरामचन्द्र जी को देखकर फिर पृथ्वी की ओर देखती हुई सीता जी के चञ्चल नेत्र इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो चन्द्रमण्डल रुपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों।।

सीता जी की वाणीरुपी भ्रमरी को उनके मुखरुपी कमल ने रोक रखा है। लाजरुपी रात्रि को देखकर वह प्रकट नहीं हो रही है। नेत्रों का जल नेत्रों के कोने में ही रह जाता है। जैसे बड़े भारी कंजूस का सोना कोने में ही गड़ा रह जाता है। अपनी बढ़ी हुई व्याकुलता जानकर सीताजी सकुचा गयीं और धीरज धरकर हृदय में विश्वास ले आयीं कि यदि तन, मन और वचन से मेरा प्रण सच्चा है और श्रीरघुनाथ जी के चरण कमलों में मेरा चित्त वास्तव में अनुरक्त है।।

तो सब के हृदय में निवास करने वाले भगवान् मुझे रघुश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र जी की दासी अवश्य बनायेंगे। जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।।

प्रभु की ओर देखकर सीताजी ने शरीर के द्वारा प्रेम ठान लिया अर्थात् यह निश्चय कर लिया। कि यह शरीर इन्हीं का होकर रहेगा। कृपानिधान श्रीराम जी सब जान गये। उन्होने सीताजी को देखकर धनुष की ओरऐसे ताका, जैसे गरुड़ जी छोटे-से सर्प की ओर देखते हैं।।

3. श्रीरामचन्द्र जी ने धनुष को किस प्रकार देखा?

उत्तर-धनुष को ऐसे देखा जैसे गरुड़ छोटे से सर्प को देखता है।

दोहा-मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्ब।

महामत्त गजराज कहुँ, बस कर अंकुश खर्ब।।

काव्यगत सौंदर्य- रस-वीर, छन्द- दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, भाषा-अवधी, गुण-ओज

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर-उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर– व्याख्या– एक सखी सीता जी की माता से कहती है कि हे रानी! जैसे ॐ का मंत्र अत्यधिक छोटा होता है परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश और समस्त देवता उसके वश में है; उसी प्रकार मदमस्त हाथी को अपने वश में करने वाला अंकुश भी बहुत छोटा होता है। अतः आप श्रीराम को छोटा न समझें।

3. **उपर्युक्त पंक्तियों में किस समय का वर्णन है?**

उत्तर– धनुष-भंग के समय का वर्णन किया गया है।

भरे भुवनघोर कठोर रव, रबि, बाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–सवैया, अलंकार–अतिशयोक्ति, अनुप्रास, भाषा–अवधी, गुण–ओज, प्रसाद

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
उत्तर-उपर्युक्त।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
उत्तर-व्याख्या-घोर कठोर शब्द से तीनों लोक भर गये भयभीत होकर सूर्य के घोड़े अपनी राह छोड़कर जाने लगे दिग्गज चिंघाड़ने लगे धरती काँपने लगी, शेषनाग, वाराह, कच्छप ये सभी व्याकुल हो उठे। धनुष भंग की भयंकर ध्वनि के कारण देवता एवं असुर तथा ऋषिगण कानों पर हाथ रखकर व्याकुल होकर सोच रहें हैं कि अब क्या होने वाला है। तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम जी ने धनुष तोड़ दिया है यह सभी को ज्ञात हो गया है उसी की भयंकर ध्वनि है। सभी लोग श्रीराम की जय-जयकार करने लगें।
3. **उपर्युक्त पंक्तियों में किस समय का वर्णन है?**
उत्तर-श्रीरामचन्द्र द्वारा धनुष-भंग का वर्णन है।

4. जब रामचन्द्र जी ने धनुष तोड़ा तो उस समय क्या स्थिति हुई?

उत्तर- धनुष भंग के कठोर ध्वनि से सब लोक भर गये, सूर्य के घोड़े मार्ग छोड़कर चलने लगे। दिग्गज चिंघाड़ने लगे, धरती डोलने लगी, शेष, वाराह और कच्छप व्याकुल हो उठे। देवता, राक्षस और मुनि कानों पर हाथ रखकर सब व्याकुल होकर विचारने लगे। तुलसीदास जी कहते हैं, जब सबको निश्चय हो गया कि श्री रामजी ने धनुष को तोड़ डाला, तब सब श्री रामचन्द्र जी की जय बोलने लगे।

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला।।
राम चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा।।
चाप समीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए।।
सब कर संसउ अरु अग्यानू। मंद महीपन्ह कर अभिमानू।।
भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई।।
सिय कर सोचु जनक पिछतावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा।।
संभुचाप बड़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई।।
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारू।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–वीर, छन्द–चौपाई, अलंकार–रूपक, भाषा–अवधी, गुण–ओज, प्रसाद

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर– उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या-**तुलसीदास जी कहते हैं कि इधर जब लक्ष्मणजी ने देखा कि रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्रजी ने शिवजी के धनुष की ओर ताका है, तो वे शरीर से पुलकित हो ब्रह्माण्ड को चरणों से दबाकर निम्नलिखित बचन बोले-हे दिग्गजों! हे कच्छप! हे शेष! हे वाराह! धीरज धरकर पृथ्वी को थामें रहो, जिससे यह हिलने न पावे। श्रीरामचन्द्रजी शिवजी के धनुष को तोड़ना चाहते हैं। मेरी आज्ञा सुनकर सब सावधान हो जाओ।**

श्रीरामचन्द्रजी जब धनुष के समीप आये, तब सब स्त्री-पुरुषों ने देवताओं और पुण्यों को स्मरण किया। सबका सन्देह और अज्ञान, नीच राजाओं का अभिमान, परशुरामजी के गर्व की गुरुता, देवता और रानियों के दारुण दुःख का दावानल, ये सब शिवजी की धनुषरुपी बड़े जहाज को पाकर, समाज बनाकर उस पर जा चढ़े। ये श्रीरामचन्द्रजी की भुजाओं के बलरुपी अपार समुद्र के पार जाना चाहते हैं, परन्तु कोई केवट नहीं ळें

3. **ब्रह्माण्ड को चरणों से किसने दबाया?**

   उत्तर-लक्ष्मण जी ने

4. **कड़हारु, बोहितु, शब्दों के अर्थ लिखिए।**

   उत्तर- **कड़हारु** - केवट, **बोहितु** - जहाज।

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गये मधुराधर वै।।
फिर बूझति हैं–'चलनो अब केतिक, पर्णकुटी करिहौं कित् ह्वै?'
तिय की लखि आतुरता पिय की, अँखिया अति चारु चलीं जल च्वै।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार, छन्द– सवैया, अलंकार–अनुप्रास, भाषा– ब्रज, गुण–प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर– उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–व्याख्या–**जब सीता जी अयोध्या से बाहर निकली तो बहुत धैर्य से मार्ग में दो पग चली। उनके माथे पर पसीने की बूंदे आ गई तथा सुकोमल होंठ पूरी तरह से सूख गये।** तभी वे श्री राम से पूछनें

लगी कि अभी हमें कितनी दूर और चलना है। तथा हम अपनी पर्णकुटी कहाँ बनायेंगे। सीता जी की ऐसी दसा एवं व्याकुलता देखकर श्रीराम जी की आँखों से अश्रु धारा बह चली।

3. पद्यांश में 'मधुराधर' शब्द का विशेषण-विशेष्य छाँटकर लिखिए।

उत्तर-विशेषण-मधुर, विशेष्य-अधर (होंठ)

4. कौन नगर से निकलकर वन पथ पर अग्रसर हो रहे हैं?

उत्तर- राम, लक्ष्मण और सीता।

5. 'पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै' में कौन सा अलंकार है?

उत्तर-अनुप्रास अलंकार।

सीस जटा, उर बाहु, बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी-सी भौंहें।
तून सरासन बान धरे, तुलसी बन-मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं।
पूछति ग्राम बधू सिय सो 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को हैं?"

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार, छन्द- सवैया, अलंकार-अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या-ग्राम वधुएँ सीता जी से कहती हैं कि जिनके सिर पर जटाएँ हैं जिनकी भुजाएँ एवं हृदय स्थल विशाल है, नेत्र लाल हैं, भौहें तिरछी हैं, जिन्होने तरकस धनुष और बाण धारण कर रखा है जो वन मार्ग में भली प्रकार सुशोभित हो रहें हैं। **बार-बार आदर और चाव के साथ तुम्हारी ओर देखते हुए हमारे मन को मोहित कर रहे हैं। सच बताओ वे सांवले से तुम्हारे कौन लगते हैं?**
3. **ग्राम वधुएँ सीता जी से क्या पूछती हैं?**
   उत्तर-ग्राम बधुएँ बार-बार आदर और चाव के साथ तुम्हारी ओर देखते हुए हमारे मन को मोहित कर रहे हैं। सच बताओ वे सांवले से तुम्हारे कौन लगते हैं?

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

4. ग्राम वधुएँ राम के रुप सौंदर्य के बारे में क्या कह रहीं है?

उत्तर-राम के रुप सौंदर्य के बारे में ग्राम वधुएँ कह रहीं है-श्रीराम के सिर पर जटाएँ हैं, भुजाएँ एवं हृदय स्थल विशाल है, नेत्र लाल हैं, भौहें तिरछी हैं, तरकस धनुष और बाण धारण कर रखा है। वे श्रीराम वन मार्ग में भली प्रकार सुशोभित हो रहें हैं।

सुनि सुन्दर बैन सुधारस-साने, सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हे, समुझाइ कछू मुसकाइ चली।।
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै, अवलोकति लोचन-लाहु अली।
अनुराग-तड़ाग में भानु उदै, बिगसी मनो मंजुल कंज-कली।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार, छन्द- सवैया, अलंकार-उत्प्रेक्षा,रूपक, अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या-सीता जी ने ग्राम वधुओं के अमृत से पूर्ण वचनों को सुनकर उनके मनोभावों को समझ गई। चतुर सीताजी ने उनके प्रश्न का उत्तर अपनी मुस्कान एवं संकेत भरी दृष्टि से दिया तुलसीदास कहते हैं कि सीताजी के संकेत को समझकर सभी सखियाँ राम की सुन्दरता को देखती हुई नेत्रों का लाभ प्राप्त करने लगीं। <u>**तुलसीदास जी कहते हैं कि तब ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रेमरुपी सरोवर में रामरुपी सूर्य का उदय हो गया हो और ग्राम बधुओं के नेत्र रूपी कमल की सुन्दर कलियाँ खिल गई हो।**</u>

3. **'अनुराग-तड़ाग' तथा 'मंजुल कंज'-कली में कौन सा अलंकार है?**

उत्तर-:रूपक अलंकार।

जल को गये लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।
तुलसी रघुवीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलम्ब लौं कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु बारि विलोचन बाढ़े।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार, छन्द– सवैया, अलंकार–अनुप्रास, भाषा– ब्रज, गुण–प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर– उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–व्याख्या–सीताजी श्रीरामचन्द्र जी से कहती है कि लक्ष्मण पानी लेने गये है अतः एक घड़ी पेड़ की छाया में खड़े होकर उनकी प्रतीक्षा कर लें तब तक मैं आपका पसीना पोछकर हवा कर दूँगी। गर्म रेत पर चलने के कारण आप के पाँव तप्त हो रहे होंगे मैं उनको धो दूँगी। **श्रीरामचन्द्र जी प्रिया सीता को**

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

थकी जानकर बैठ गये और विश्राम देने की दृष्टि से उनके पाँवों से बड़ी देर तक काँटें निकालते रहे। सीताजी अपने प्रियतम का प्रेम देखकर पुलकित हो उठी और उनके नेत्रों से अश्रु प्रवाह होने लगा।

3. पानी लेने कौन गया है?

उत्तर- लक्ष्मण जी।

4. पद्यांश में किन दो पात्रों के बीच संवाद हो रहा है?

उत्तर- श्रीराम एवं सीता जी के बीच।

‘सवैये’

सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित ‘सवैये’ शीर्षक से अवतरित है इसके रचयिता प्रसिद्ध कृष्ण भक्त कवि रसखान जी है।

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।

खेलत खात फिरै अँगना, पग पैंजनी बाजति पीर कछोटी।।

वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।

काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार, वात्सल्य, छन्द- सवैया, अलंकार-अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. **प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या– **रसखान कहते हैं कि श्रीकृष्ण श्याम वर्ण वाले धूल से युक्त अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक लग रहें हैं। उसी प्रकार उनके सिर पर सुन्दर चोंटी सुशोभित हो रही है। वे अपने आँगन में खाते और खेलते हुए घूम रहें हैं तथा उनके पैरों में पायल बज रही है। श्रीकृष्ण पीली लगोंटी धारण किये हुए हैं।** उस सौदर्य को देखकर कामदेव भी उन पर अपनी करोड़ों कलाओं को न्योछावर कर रहा है। उस कौए का भाग्य भी कितना अच्छा है जो श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीन ले गया।

3. प्रस्तुत पद्यांश में किसे भाग्यशाली बताया गया है?

उत्तर–प्रस्तुत पद्यांश में कौए को भाग्यशाली बताया गया है।

4. आँगन में कौन खेल रहा है?

उत्तर–बालक श्रीकृष्ण खेल रहे हैं।

5. श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करें।

उत्तर–श्रीकृष्ण श्याम वर्ण वाले धूल से युक्त अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक लग रहें हैं। उसी प्रकार उनके सिर पर सुन्दर चोंटी सुशोभित हो रही है। पैरों में पायल बज रही है तथा पीली लगोंटी धारण किये हुए हैं।

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नन्द की धेनु मँझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यौ कर छत्र पुरन्दर-धारन।
जो खग हैं तो बसेरो कहौं, मिलि कालिंदी-कूल कदम्ब की डारन।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत, भक्ति छन्द- सवैया, अलंकार-अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- व्याख्या-कविवर रसखान कहते हैं यदि मृत्यु के बाद हमारा जन्म पुनः मनुष्यरुप में हो तो मेरी कामना यही है कि मैं ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच में निवास करुँ। यदि मेरा जन्म पशु के रुप में हो तो मेरा कोई वश नहीं होगा, किन्तु मेरी इच्छा है कि मैं सदैव नन्द जी की गायों के बीच में चरा करुँ। यदि मेरा पुनर्जन्म एक पत्थर के रुप में हो तो मैं उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ जिसे

श्रीकृष्ण ने इन्द्र के गर्व को चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था। यदि मेरा जन्म एक पक्षी के रुप में हो तो मेरी इच्छा है कि मैं यमुना के किनारे पर स्थित कदम्ब की डाल पर बसेरा करुँ।

3. रसखान जी की क्या इच्छा है?

उत्तर- उपर्युक्त सम्पूर्ण व्याख्या लिखें।

4. कालिन्दी किसे कहा गया है?

उत्तर- कालिन्दी यमुना को कहा गया है।

5. 'पुरन्दर' किसका पर्यायवाची है?

उत्तर- इन्द्र का।

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल करें पहिरौंगी।

ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारन संग फिरौंगी।।

भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।।

या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार छन्द- सवैया, अलंकार-अनुप्रास, यमक, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर-व्याख्या-एक गोपी कहती है कि मैं तुम्हारे संकेत पर मोर के पंख को अपने सिर पर धारण कर लूँगी, गुंजाओं की माला को अपने गले में धारण कर लूँगी। पीताम्बर को ओढ़कर, लकड़ी को लेकर मैं जंगल में गायों और ग्वालों के साथ भी घूमूँगी। **तुम्हारे कहने पर मैं उन सारी लीलाओं को करने**

के लिए तैयार हूँ जो रस की खान श्रीकृष्ण को अच्छी लगती थीं, किन्तु मैं श्रीकृष्ण के अधरों पर सुशोभित होनेवाली बाँसुरी को अपने होठों पर नहीं रखूँगी।

3. **श्रीकृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों ने कृष्ण की किन लीलाओं का अनुकरण किया है?**

उत्तर- गोपियों ने मोर के पंख को अपने सिर पर धारण करने का, गुंजा की माला गले मे पहनने का, पीताम्बर को ओढ़ने का तथा लकड़ी लेकर जंगल में गायों एवं ग्वालों के साथ गोधन गाते हुए घूमने का अनुकरण किया है।

जा दिन तें वह नंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहिनि ताननि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सों कछु टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाइ गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, बिकाइ गयौ है।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार, छन्द– सवैया, अलंकार–अनुप्रास, श्लेष, उपमा, भाषा– ब्रज, गुण–प्रसाद, माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर- उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर-व्याख्या-कविवर रसखान कहते हैं एक गोपी अपनी सखी से कह रही है कि हे सखी जिस दिन से ओ नन्द का पुत्र इस वन में अपनी गायों को चराकर और वंसी बजाकर तथा उसपर मोहक गीत की तान सुनाकर हमें रिझाकर गया है। **उसी दिन से कोई टोना-टोटका सा करके वह रस की खान अर्थात श्रीकृष्ण हमारे हृदयों में समा गया है तब से कोई किसी की मर्यादा की परवाह नहीं करता सम्पूर्ण ब्रज श्रीकृष्ण के हाथों बिक गया है अर्थात् उनके प्रेम के वशीभूत हो गया है।**
3. **सम्पूर्ण ब्रज किसके वशीभूत हो गया है?**
   उत्तर- श्रीकृष्ण के।
4. **'गोधन' से क्या तात्पर्य है?**
   उत्तर- 'गोधन' से तात्पर्य ब्रज प्रदेश में गाये जाने वाले एक गीत से है।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class